नानाजी जन्म शताब्दी समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें मुख्यअतिथि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ग्रामवासी यदि जीवन में बदलाव लाने का संकल्प लेकर चले तो 2022 में आजादी के 75 साल पूरे होने पर हम ग्रामोदय के सपने को साकार कर सकते हैं। श्री मोदी ने कहा कि नानाजी को देश ज्यादा जानता नहीं था। लेकिन आपातकाल के समय जब जयप्रकाश जी ने देश में पनप रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन किया, तब जयप्रकाशजी पर बहुत बड़ा हमला हुआ और उस समय उनके बगल में नानाजी देशमुख खड़े थे। नानाजी ने अपने हाथों पर वो मृत्यु स्वरूप प्रहार को झेल लिया। उनके हाथ की हड्डिया टूट गई लेकिन जयप्रकाशजी को चोट से उन्होंने बचा लिया और वो एक ऐसी घटना थी जिससे देश का ध्यान नानाजी की तरफ गया। नानाजी जीवनभर देश के लिए जिए। उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान बनाकर देश के लिए जीना सीखो, देश के लिए कुछ करके रहो के मंत्र के साथ युवा दंपतियों को निमंत्रित किया। सैकड़ों की तादाद में ऐसे युवा दंपति आगे आए और उनको उन्होंने ग्राम विकास के काम में लगाया। जब मुरारजी भाई प्रधानमंत्री थे। देश में जनता पार्टी का शासन था। नानाजी को मंत्रिपरिषद के लिए आमंत्रित किया गया। तब नानाजी ने विनम्रता पूर्वक मंत्रिपरिषद में शामिल होने से इनकार किया और 60 साल की उम्र में स्वयं को राजनीति से अलग कर लिया। करीब साढ़े तीन दशक तक उन्होंने चित्रकूट, गोंडा को केन्द्र में रखकर ग्रामीण विकास का काम किया।

मुझे खुशी है कि नानाजी के जन्मशती के अवसर पर भारत सरकार इन महापुरूषों के सपनों के आधार पर महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर ग्रामीण विकास की दिशा में आगे बढ़ने का काम कर रही है। गांव कैसे आत्मनिर्भर बने, हमारे गांव गरीबी से कैसे मुक्त हों, गांव बीमारी से कैसे मुक्त हों, गांव से जातिवाद का जहर कैसे खत्म किया जाय और एक समृद्ध गांव का निर्माण करने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। भारत सरकार गांव के कल्याण के लिए संकल्पित है और गांव के विकास को जन भागीदारी से आगे बढ़ाने की दिशा में अनेक कदम उठा रही है। यहां पर देश के ग्रामीण जीवन पर परिवर्तन के लिए, ग्रामीण जीवन के लिए योगदान देने को लेकर,

ग्रामीण कृषि जीवन का ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव पर लगातार चिंतन किया गया है। मैं सभी को विश्वास दिलाता हूं कि इस मसले पर जो विचार मंथन किया गया है और जो बिंदु छांटे गए हैं, भारत सरकार उस पर गंभीरता से विचार करेगी। मैं, जानता हूं कि यहां देश के हर कोने से लोग आए हैं। अलग-अलग इलाके की अलग-अलग प्रकृति होती है, अलग समस्या होती है। बाहर से थोपी गई चीज से ग्रामीणजनों का जीवन संघर्षमय हो जाता है। इसलिए हमारा प्रयास है कि गांव की अपनी शक्ति, उसके अपने सामर्थ के अनुसार काम किया जाय। हमें यह समझना होगा कि विकास और अच्छे काम की योजना से